Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

भारत की ग्लोबल साउथ में बढ़ती साझेदारी का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

डॉ. शकुंतला देवी राणा सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, प्रोफेसर सिम्मी अग्निहोत्री राजकीय महाविद्यालय, हरोली, जिला ऊना, हिमाचल प्रदेश.

ABSTRACT:

ग्लोबल साउथ से तात्पर्य उन विकासशील देशों से है जो आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक रूप से सुदृढ़ नहीं हैं और विकसित देशों से सहायता प्राप्त करने के लिए सहयोग और साझेदारी पर निर्भर रहते हैं। ग्लोबल साउथ के देशों में अब अपने अस्मिता को पहचाना शुरू किया है। ग्लोबल साउथ की बढ़ती आर्थिक और राजनीतिक शक्ति का वैश्विक भू-राजनीति पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव हो रहा है। अब यह समय पोस्ट वेस्टर्न कहा जा रहा है और यह शताब्दी एशिया की शताब्दी कही जा रही है। भारत इन दिनों में ग्लोबल साउथ देश की आवाज बन रहा है। जनवरी 2023 में भारत द्वारा आयोजित 'वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट' में भारत के प्रधानमंत्री ने ग्लोबल साउथ देशों के विकास के लिये पाँच पहलों की घोषणा की है।

भारत की ग्लोबल साउथ में बढ़ती साझेदारी न केवल इन देशों के आर्थिक और सामाजिक विकास में सहायक है, बल्कि भारत की अर्थव्यवस्था के लिए भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह साझेदारी भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में सहायक सिद्ध हो रही है। ग्लोबल साउथ देशों के साथ भारत के संबंध अर्थव्यवस्था के साथ कई दिशाओं में फायदेमंद है।

KEYWORDS:

ग्लोबल साउथ, लैटिन अमेरिका, शीत युद्ध, सोवियत संघ, उपनिवेशवाद, तीसरी दुनिया, आरोग्य मैत्री, राजनीतिक प्रभाव, पश्चिमी मीडिया, औपनिवेशिक शासन ।

प्रस्तावना

ग्लोबल साउथ से तात्पर्य उन विकासशील देशों से है जो आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक रूप से सुदृढ़ नहीं हैं और विकसित देशों से सहायता प्राप्त करने के लिए सहयोग और साझेदारी पर निर्भर रहते हैं। इसमें एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के कई देश शामिल हैं। आमतौर पर ग्लोबल नॉर्थ के धनी देशों की तुलना में इन देशों में उच्च स्तर की गरीबी, आय असमानता और जीवन स्थितियाँ चुनौतीपूर्ण हैं।

'ग्लोबल नॉर्थ' अधिक समृद्ध राष्ट्र हैं जो ज़्यादातर उत्तरी अमेरिका और यूरोप में स्थित हैं, इनमें ओशिनिया तथा अन्य जगहों पर कुछ नए देश भी शामिल हैं। शीत युद्ध के समय दुनिया दो भागों में बंट गई थी। अमेरिका को पहले दुनिया कहा गया। सोवियत संघ दूसरी दुनिया था। वर्ष 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद जिसे 'दूसरी दुनिया / सेकंड वर्ल्ड' कहा जाता था, तीसरी दुनिया की अवधारणा सामने आई। पूर्व में विकासशील देशों को आमतौर पर 'तीसरी दुनिया' माना गया। यह शब्द वर्ष 1952 में अल्फ्रेड सॉवी द्वारा दिया गया था। यद्यपि यह शब्द गरीबी, अस्थिरता और पश्चिमी मीडिया द्वारा प्रचारित नकारात्मक रूढ़िवादिता से संबद्ध है।

ग्लोबल साउथ शब्द को पहली बार वर्ष 1969 में राजनीतिक कार्यकर्त्ता कार्ल ओग्लेसबी द्वारा दिया गया था। परिणामस्वरूप 'ग्लोबल साउथ' शब्द एक अधिक तटस्थ विकल्प के रूप में उभरा। यह तीसरी दुनिया थर्ड वर्ल्ड शब्द से अधिक उपयुक्त है।

ग्लोबल साउथ शब्द की कोई विशुद्ध भौगोलिक परिभाषा नहीं है। यह एक ऐसी रखा है जो पूरी दुनिया को दो भागों में बांटती है। यह राष्ट्रों के बीच राजनीतिक, भू-राजनीतिक और आर्थिक समानताओं के संयोजन का प्रतीक है। ग्लोबल साउथ के कई देशों में साम्राज्यवाद और औपनिवेशिक शासन का इतिहास रहा है।

वर्तमान समय में ग्लोबल साउथ का महत्त्व-

ग्लोबल साउथ के देशों में अब अपने अस्मिता को पहचाना शुरू किया है। उनके पास संसाधन अधिक है परंतु वे उपनिवेशवाद के शिकार रहे हैं। ग्लोबल नॉर्थ के देशों ने उन पर कार्बन उत्सर्जन मानवाधिकार जैसे कई प्रतिबंध लगाए हैं। किंतु ग्लोबल साउथ में हाल के दशकों में धन और राजनीतिक परिस्थितियों में महत्त्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। विश्व बैंक ने आर्थिक शक्ति वितरण की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देते हुए उत्तरी अटलांटिक से एशिया-प्रशांत क्षेत्र में 'संपत्ति में बदलाव' की पहचान की है। अनुमानों से संकेत मिलता है कि वर्ष 2030 तक चार सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से तीन ग्लोबल साउथ के होंगे जिनमें चीन और भारत अग्रणी होंगे। ब्रिक्स देशों (ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) का संयुक्त सकल घरेलू उत्पाद (GDP) पहले से ही G-7 देशों से अधिक है। इसके अलावा चीन, सऊदी अरब और ब्राज़ील जैसे ग्लोबल साउथ के राजनेता तेज़ी से वैश्विक मामलों में प्रभावशाली भूमिका निभा रहे हैं। ग्लोबल साउथ की बढ़ती आर्थिक और राजनीतिक शक्ति का वैश्विक भू-राजनीति पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव है। अब यह समय पोस्ट वेस्टर्न कहा जा रहा है और यह शताब्दी एशिया की शताब्दी कही जा रही है। क्योंकि ग्लोबल साउथ का प्रभाव ग्लोबल नॉर्थ के ऐतिहासिक प्रभुत्व को चुनौती दे रहा है।

ग्लोबल साउथ और भारत-

ग्लोबल साउथ देश से भारत के प्राचीन संबंध रहे हैं। वर्तमान समय में भी ग्लोबल साउथ देश से भारत के संबंध प्रगाढ़ हो रहे हैं। भारत इन दिनों में ग्लोबल साउथ देश की आवाज बन रहा है। जनवरी 2023 में भारत द्वारा आयोजित 'वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट' में भारत के प्रधानमंत्री ने ग्लोबल साउथ देशों के विकास के लिये पाँच पहलों की घोषणा की-

1.'ग्लोबल साउथ सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' विकास समाधानों और सर्वोत्तम प्रथाओं पर शोध करेगा जिन्हें अन्य विकासशील देशों में लागू किया जा सकता है।

2. 'ग्लोबल साउथ साइंस एंड टेक्नोलॉजी इनिशिएटिव' का उद्देश्य अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और परमाणु ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में भारतीय विशेषज्ञता को साझा करना है।

3.'आरोग्य मैत्री' परियोजना प्राकृतिक आपदाओं या मानवीय संकटों से प्रभावित किसी भी विकासशील देश को आवश्यक चिकित्सा आपूर्ति प्रदान करेगी।

4. 'ग्लोबल साउथ यंग डिप्लोमैट्स फोरम' विदेश मंत्रालयों के युवा अधिकारियों को जोड़ेगा।

5. 'ग्लोबल साउथ स्कॉलरशिप' विकासशील देशों के छात्रों को भारत में उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करेगी।

भारत के इन प्रयासों से ग्लोबल साउथ देशों से भारत के संबंधों में नयापन आ रहा है। भारत के इन देशों से रिश्ते सामरिक, राजनीतिक, कूटनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक हो रहे हैं। चीन को पीछे छोड़ते हुए इन देशों के साथ हमने आर्थिक साझेदारी बढाई है। भारत इन देशों को ऋण और अनुदान भी दे रहा है। इन देशों के साथ व्यापार प्रतिशत बढ़ता जा रहा है। इस प्रकार एक आर्थिक और राजनीतिक शक्ति के रूप में भारत ने ग्लोबल साउथ में उदय होकर पारंपरिक शक्तियों की गतिशीलता को चुनौती दी है और बदलती वैश्विक व्यवस्था की ओर ध्यान आकर्षित किया है। भारत की इन देशों के साथ साझेदारी बढ़ने से न केवल उनके विकास को बल मिलता है, बल्कि भारत की अर्थव्यवस्था को भी बहुआयामी लाभ प्राप्त होते हैं।

1. निर्यात में वृद्धि और व्यापार का विस्तार-

ग्लोबल साउथ के देशों के साथ भारत के व्यापारिक संबंध मजबूत होने से भारत के निर्यात में वृद्धि होती है। भारत इन देशों को वस्त्र, दवाइयां, टेक्नोलॉजी, कृषि उत्पाद और अन्य वस्तुएं निर्यात करता है। इसके परिणामस्वरूप, व्यापार संतुलन को बनाए रखते हुए भारतीय कंपनियों को भी नए बाजार मिलते हैं। यह आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक लाभदायक है क्योंकि इससे देश की जीडीपी में वृद्धि होती है और विदेशी मुद्रा भंडार में सुधार होता है।

2. अंतर्राष्ट्रीय निवेश और विकास की संभावनाएँ-

भारत की ग्लोबल साउथ में बढ़ती साझेदारी के परिणामस्वरूप, इन देशों में भारत के निवेश का अवसर भी बढ़ा है। भारत विभिन्न क्षेत्रों में जैसे ऊर्जा, कृषि, डिजिटल टेक्नोलॉजी और बुनियादी ढांचा में निवेश करता है, जिससे उसे न केवल इन क्षेत्रों में विस्तार करने का अवसर मिलता है बल्कि विदेशों से भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की संभावना भी बढ़ती है। यह निवेश भारतीय अर्थव्यवस्था को स्थायित्व और विकास का आधार प्रदान करता है।

3. विकासशील देशों को समर्थन-

भारत की ग्लोबल साउथ में भागीदारी अन्य विकासशील देशों के लिए समर्थन की भावना भी उत्पन्न करती है। भारत द्वारा अफ्रीकी और एशियाई देशों को तकनीकी ज्ञान और कौशल में सहयोग प्रदान करना उनके आर्थिक विकास में सहायक होता है। इस सहयोग के बदले में, इन देशों से भारत को कृषि उत्पाद, खनिज और प्राकृतिक संसाधनों का आयात मिल सकता है, जो भारतीय उद्योगों की जरूरतों को पूरा करने में सहायक सिद्ध होता है।

4. सॉफ्ट पावर और राजनीतिक प्रभाव-

भारत ग्लोबल साउथ में अपनी स्थिति को सॉफ्ट पावर के माध्यम से मजबूत बना रहा है। यह वैश्विक स्तर पर उसकी छवि को और भी सशक्त बनाता है। इसके माध्यम से भारत न केवल आर्थिक लाभ प्राप्त करता है बल्कि वैश्विक मंच पर अपनी आवाज़ को भी बुलंद करता है। संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन (WTO), और G20 जैसे वैश्विक संगठनों में भारत की स्थिति मजबूत होती है, जिससे उसके आर्थिक हितों की रक्षा होती है और भारत अपने एजेंडे को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर पाता है।

5. रोजगार और कौशल विकास-

ग्लोबल साउथ के देशों में भारत द्वारा की जाने वाली परियोजनाओं में बड़ी संख्या में भारतीय कर्मचारियों को रोजगार प्राप्त होता है। इससे भारतीय श्रमिकों और युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होते हैं। साथ ही, कौशल विकास का अवसर भी मिलता है, जिससे भारत का श्रम बल अधिक कुशल और प्रतिस्पर्धी बनता है।

6. संवेदनशील क्षेत्रों में सहयोग-

भारत ग्लोबल साउथ के साथ स्वास्थ्य, शिक्षा, और विज्ञान-प्रौद्योगिकी जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में भी साझेदारी बढ़ा रहा है। यह साझेदारी न केवल इन देशों में सामाजिक सुधार लाने में सहायक होती है बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था को भी लाभ पहुँचाती है। खासकर फार्मास्युटिकल और टेक्नोलॉजी क्षेत्र में सहयोग के कारण, भारतीय कंपनियाँ नए शोध और नवाचार के लिए अधिक अवसर प्राप्त कर रही हैं, जिससे उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ती है।

निष्कर्ष-

भारत की ग्लोबल साउथ में बढ़ती साझेदारी न केवल इन देशों के आर्थिक और सामाजिक विकास में सहायक है, बल्कि भारत की अर्थव्यवस्था के लिए भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह साझेदारी भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में सहायक सिद्ध हो रही है, जिसमें निर्यात में वृद्धि, निवेश के अवसर, राजनीतिक प्रभाव, रोजगार सृजन और कौशल विकास प्रमुख हैं। इसके माध्यम से भारत एक सशक्त वैश्विक शक्ति बनने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है और उसके आर्थिक विकास के रास्ते खुल रहे हैं।

REFERENCES

1. गोर. सी. (2017), अफ्रीका में बिजली संरचना और बांध, अफ्रीका में बिजली : युगांडा में परिवर्तन की राजनीति (पीपी 12-26) वुडब्रिज, सफोक (जीबी) रोचेस्टर, न्यूयॉर्क न्यूएमर : बंचिडेल और ब्रेवर

2. गुप्ता ए. (2009), द कॉन्टेक्स्ट ऑफ न्यू नेपाल : चैलैजेस एंड अपॉर्चुनिटीज फॉर इंडिया, इंडियन जर्नल ऑफ एशियन अफेयर्स, 22 (1/2), 57-73

3. हारन वी. (2018), दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग, इंडियन फॉरेन अफेयर्स जर्नल, 13(3), 195-208

4. कांग एच. (2010), (प्रतिनिधि) इंस्टिट्यूट ऑफ़ पीस एंड कनफ्लिक्ट स्टडीज।

5. कोप्पुझा, ए. (2008), (प्रतिनिधि) इंस्टिट्यूट ऑफ पीस एंड कनफ्लिक्ट स्टडीज।

6. लीब, एल. (2011), रेकॉन्फिगरेशन ऑफ दी ह्युमन राइट्स सिस्टम इन लाइट ऑफ सस्टेनेबल डेवलपमेंट एंड दी लेवल कन्सेप्यूलाइजेशन ऑफ़ एन्वाइरोमेन्टल राइट्स इन ह्यूमन राइट्स एंड दी एन्वाइरोमेन्ट : फिलोसोफिकल, थ्योरेटिकल एंड लीगल पर्सपेक्टिव्स (पीपी 109-156)

7. प्रधान एस. (2008), कोऑपरेशन फॉर एनर्जी सिक्योरिटी एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट (सीईएसएसडी) : साउथ पर्सपेक्टिव, इंडियन फॉरेन अफेयर्स जर्नल, 3(3), 68-91